12

सात गुणा एकता होना

(4:4-6)

कलीसिया की एकता की बात करते हुए पौलुस ने सात ईश्वरीय ''एके'' बताए जिन पर सदस्यों को एक होना आवश्यक है। एकता के लिए आवश्यक है कि मसीही लोग अपने वचन में बताए गए परमेश्वर के इन नियमों का सम्मान करते हुए सहमत हों।

एक ही देह (4:4)

[4]एक ही देह है।

आयत 4. एक ही देह है मसीह की देह अर्थात कलीसिया को कहा गया है। परमेश्वर ने मसीह को कलीसिया का सिर बनाया, ''यह उसकी देह है'' (1:22, 23)। उसने यहूदियों और अन्यजातियों को ''एक नया मनुष्य'' बनाया और दोनों को क्रूस के द्वारा परमेश्वर के लिए ''एक देह'' में मिलाया (2:15, 16)। अन्यजाति लोग ''एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी'' थे (3:6) और पौलुस ने समझाया कि मसीह की देह प्रत्येक सदस्य के अपना योगदान देने से बनती है (4:12, 16)। हम यह भी पढ़ते हैं कि मसीह ''देह का उद्धारकर्त्ता है'' (5:23)। इन बातों से यह निष्कर्ष निकालना सही है कि मसीह की एक ही देह है; वह एक देह यहूदियों और अन्यजातियों से मिलकर बनी है, जो परमेश्वर के साथ मिलाए गए हैं; वह देह हर सदस्य के अपना योगदान देने से बनती है; और वह देह उद्धार पाए हुए लोगों से बनती है। यदि कोई परमेश्वर से मिलाया गया है और उसे पाप से बचाया गया है, तो वह कलीसिया का भाग है।

यह विचार कि व्यक्ति पाप से उद्धार पाकर कलीसिया का भाग नहीं बनता या उद्धार पाने के लिए अलग कुछ करना पड़ता है और नये नियम में पाई जाने वाली कलीसिया का सदस्य बनने के लिए अलग करना पड़ता है। इसके अलावा यह अवधारणा कि अलग अलग शिक्षा और एक दूसरे के उलट डॉक्ट्रिनें बताने वाली बहुत सी डिनोमिनेशनों के लोग मसीह की देह बनते हैं, नये नियम की शिक्षा से बाहर हैं। यह इस तथ्य के बिल्कुल उलट है कि कलीसिया में फूट नहीं होनी चाहिए (देखें 1 कुरिन्थियों 1:10)।

मसीह की ''देह'' के रूप में कलीसिया के कई अर्थ हैं जो पवित्र शास्त्र में और जगहों पर मिलते हैं। मसीह के कलीसिया का सिर होने की बात यह ज़ोर देती है कि उसे कलीसिया के ऊपर सारा अधिकार दिया गया है और वह अपनी इच्छा के द्वारा देह की गतिविधियों को चलाता है, जो नये नियम के द्वारा बताई गई है (देखें मत्ती 28:18; कुलुस्सियों 1:18; 1 पतरस 4:11)। देह के रूप में कलीसिया का विवरण इस बात का संकेत देता है कि ''अंग बहुत से'' हैं परन्तु ''देह एक ही'' है (1 कुरिन्थियों 12:12)। मसीही लोगों को ''... एक ही आत्मा के

द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा'' दिया गया (1 कुरिन्थियों 12:13)। इसका अर्थ यह हो सकता है कि बपतिस्मा लेने के समय या तो हमें आत्मा के *निर्देश* से बपतिस्मा दिया जाता है या आत्मा हमें उस एक देह में *रखता* है। इसका अर्थ यह नहीं है कि हर मसीही को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिल गया है। पवित्र शास्त्र में पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की पहचान करते हुए केवल दो घटनाएं हैं: प्रेरितों 1:5 में प्रेरितों को और 2:4 और प्रेरितों 10:44-47; 11:15-17 में कुरनेलियुस और उसके घर के लोग। 1 कुरिन्थियों 12:13 में पौलुस ने कहा, ''हम सब को एक ही देह में बपतिस्मा दिया गया था।'' इस बपतिस्मे में जो कि ''सब'' के लिए था (देखें मत्ती 28:19, 20; मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38, 39), पानी कितना आवश्यक था (प्रेरितों 8:36-39)। इफिसियों 4:5 कहता है कि आज हमारे लिए ''एक ही बपतिस्मा'' है जो हमें ''एक देह'' में रखता है।

पौलुस ने आगे दिखाया कि एक देह के हर अंग का अलग-अलग काम है (1 कुरिन्थियों 12:14-20)। जिस प्रकार से परमेश्वर ने शारीरिक देह के हर अंग के जैसा इसे बनाया गया है उसी के अनुसार काम करने पर सही ढंग से काम करती है, वैसे ही कलीसिया में हर सदस्य को पूरी देह की भलाई में योगदान देने के लिए दान या तोड़ा या योग्यता दी गई है। पौलुस ने ध्यान दिलाया कि देह के हर अंग का महत्व है (1 कुरिन्थियों 12:21-24)। उदाहरण के लिए शारीरिक देह में देखने के लिए आंख अच्छी है, परन्तु यह सुनने के लिए नहीं है। शारीरिक देह तभी काम करती है जब हर अंग अपना-अपना काम करें। इसी प्रकार से मसीह की देह अर्थात कलीसिया का हर अंग जब वह करता है जो वह कर सकता है तो पूरी देह वह प्राप्त करती है जो परमेश्वर चाहता है कि वह करे।

देह के लिए एक होना आवश्यक है। विभाजित कलीसिया वैसे ही अपना काम सही ढंग से नहीं कर पाएगी जैसे विभाजित शारीरिक देह सही ढंग से काम नहीं कर सकती है। मसीह की देह जो उन सदस्यों से बनती है जो एक-दूसरे से प्रेम करते और ''एक-दूसरे के लिए वैसे ही चिंता करते हैं'' ताकि ''ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक-दूसरे की बराबर चिन्ता करें। इसलिए यदि एक अंग दु:ख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दु:ख पाते हैं'' (1 कुरिन्थियों 12:25, 26)। शारीरिक देह के एक अंग को चोट लगती है तो पूरी देह में दर्द होता है। उसी प्रकार से यदि कलीसिया के एक सदस्य को दुख होता है तो सभी सदस्य दुखी होते हैं; यदि एक सदस्य कुछ प्राप्त करता है तो सभी प्राप्त करते हैं।

पवित्र शास्त्र के लिए उचित सम्मान रखकर एक के लिए बाइबली आधार तय करते हुए पौलुस ने कहा, ''एक ही देह है।'' मसीह की केवल एक ही कलीसिया है, चाहे हमारी बहुधर्मी संस्कृति इसके उलट सोचती हो।

एक ही आत्मा (4:4)

[4]और एक ही आत्मा।

आयत 4. एक ही आत्मा पवित्र आत्मा है जिसने प्रकाशन के द्वारा परमेश्वर की सनातन मंशा बताई (देखें 1 कुरिन्थियों 2:13; इफिसियों 3:1-10)। वह देह को जीवन देता है (2 कुरिन्थियों

3:6) कलीसिया में वास करता है (1 कुरिन्थियों 3:16) और मसीही व्यक्ति के अन्दर रहता है (1 कुरिन्थियों 6:19)। वह मसीही व्यक्ति को सामर्थ भी देता है (इफिसियों 3:16) और उसने उस पर प्रभु के आने पर अपनी पूरी मिरास के बयाने के रूप में छाप भी की है (देखें 1:13, 14)। यह एक आत्मा देह के लोगों की परमेश्वर तक पहुंच करवाता है (2:18) और देह के अन्दर एकता करवाता है। इसलिए इस एकता को ''आत्मा की एकता'' कहा गया है (4:3)।

एक ही आशा (4:4)

[4]जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।

आयत 4. बुलाए गए और **बुलाए जाने** की अवधारणाएं इस पत्र में पहले दी गई थी। 1:18 में पौलुस ने मसीही लोगों के लिए उनके मन ज्योतिर्मय होने की प्रार्थना की ताकि वे ''जान लें कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है।'' 4:1 में उसने उनसे ''जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल'' चलने को कहा था। पहले भाग में ज़ोर बुलाने वाले पर था जबकि दूसरे हवाले में ज़ोर बुलाए जाने पर था। आयत 4 उन लोगों की बात करती है जिन्हें बुलाया गया है। एकता का बुलाए जाने और आशा से सम्बन्ध कैसे है? पौलुस ने कहा कि कलीसिया में अन्यजाति लोग किसी समय मसीह से अलग और आशाहीन थे, परन्तु मसीही बन जाने पर उन्हें मसीह में आशा मिली थी (1:12; 2:12)। इफिसियों को यह आशा परमेश्वर के उनको अपने बुलाहट देने की पहल के कारण दी गई थी जिस से उन्हें आशा मिली थी (1:18)। उनकी आशा इस_तथ्य पर निर्भर थी कि वे मसीह में स्वर्ग और पृथ्वी को मिलाने के लिए (परमेश्वर और मनुष्य को मिलाने के लिए) परमेश्वर की सनातन मंशा का भाग बन जाएं (देखें 1:9, 10)। स्वर्ग और पृथ्वी को मिलाने का उद्देश्य उस छोटे रूप में दिखाया गया था जब यहूदियों और अन्य जाति को ''एक नया मनुष्य'' अर्थात ''एक देह'' में मिलाया गया था (2:15, 16)। परमेश्वर के साथ मेल (2:16) और देह में उद्धार (5:23) के कारण मिली आशा से हुई यह एकता कलीसिया के प्रतिदिन के जीवन में होनी चाहिए।

आशा जिसका अनुवाद (*elpis*) से हुआ है, का अर्थ ''इसे पाने की इच्छा से किसी भलाई की इच्छा'' है।[1] हमें सुसमाचार के द्वारा बुलाया गया है और जब हम सही ढंग से इसे स्वीकार करते हैं तो हम ''बुलाए गए'' लोग बन जाते हैं। बुलाए गए लोगों के रूप में हमें अपने परमेश्वर से आशा मिली है। हमारी आशा उसकी प्रतिज्ञाओं के ऊपर आधारित है। हमें उद्धार की आशा है; हमें मरे हुओं के जी उठने की आशा है। हमारी आशा मसीह में है; हमें अनन्त जीवन की आशा है; हमें मसीह के द्वितीय आगमन की आशा है; हम मसीह के आने पर उसके जैसे होने की आशा रखते हैं; और हमें स्वर्ग की आशा है।[2] यह सब ''[हमारे] बुलाए जाने की आशा'' अर्थात एक ही आशा का भाग हुई।

एक ही प्रभु (4:5)

[5]एक ही प्रभु है।

आयत 5. एक ही प्रभु यीशु मसीह को कहा गया है। मसीह के लिए पौलुस का पंसदीदा

शीर्षक ''प्रभु'' था।[3] नये नियम में इस शब्द का इस्तेमाल यीशु के लिए विशेष रूप में उसकी मृत्यु, पुनरुत्थान और ऊंचा किए जाने के सम्बन्ध में हुआ है। आरम्भिक कलीसिया का महान अधिकार यही था कि ''यीशु प्रभु है।''[4]

शीर्षक ''प्रभु'' में चौहरा अर्थ है। पहले और सर्वप्रथम इसमें *अधिकार* की बात थी। जैसे सम्पत्ति का मालिक, गुलाम पर शक्ति रखने वाला मालिक, या किसी राज्य पर राजा का शासन।[5] ''एक ही प्रभु'' के रूप में यीशु के पास सारा अधिकार है (मत्ती 28:18)। हम उस सब में जो हम विश्वास करते, सिखाते और मानते हैं अधिकार के लिए मसीह और उसके वचन को मानते हैं। उसका अधिकार मनुष्य की सोच, भावनाओं या इच्छाओं से ऊपर है। जब पौलुस ने कहा कि यीशु ''सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया'' गया है (इफिसियों 1:22), तो वह मसीह के अधिकार की ही बात कर रहा था।

दूसरा, ''प्रभु'' का अर्थ *सवामित्व* है। यीशु हमारा स्वामी है, क्योंकि उसने हमें छुड़वाया है (1:7) और अपने लहू से कलीसिया को खरीदा है (प्रेरितों 20:28)। हमें दाम देकर खरीदा गया था, इस कारण हम अब अपने नहीं हैं (देखें 1 कुरिन्थियों 6:19, 20)। तीसरा, वह हमारा प्रभु है, इस कारण मसीह *हमारा मालिक* है और हम उसके सेवक हैं। अपने लिए यह संकेत देते हुए कि वह मसीह के प्रभु होने का मानता था, पौलुस ने बार बार ''सेवक'' शब्द का इस्तेमाल किया। चौथा, प्रभु के रूप में मसीह अपने राज्य के ऊपर *राजा* है। हम मसीह के अधिकार के अधीन रहते हैं, इस कारण हम उसके हैं और मसीह के सेवक हैं और यीशु को राजा मानते हैं, इस कारण हमारा फर्ज़ है कि हम मसीह की सुनें, उसके पीछे चलें और सब बातों में उसकी आज्ञा मानें। वह ''एक ही प्रभु'' है।

एक ही विश्वास (4:5)

[5]एक ही विश्वास।

आयत 5. एक ही विश्वास मसीही धर्म द्वारा मानी जाने वाली सच्चाई के पूरे समूह के लिए है और स्वयं मसीहियत को कहा गया है। वह ''विश्वास'' है ''जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था'' (यहूदा 3), अर्थात वह विश्वास जिसके बहुत से लोग आज्ञाकार रहे हैं (प्रेरितों 6:7)। यह वही विश्वास है जिसका पौलुस ने प्रचार किया कि यह लोगों का पौषण करता है (गलातियों 1:23; 1 तीमुथियुस 4:6)। यह वही विश्वास है जिससे बहक सकते हैं, यह वही विश्वास जिससे हम मुकर सकते हैं और जिससे हम भटक सकते हैं (1 तीमुथियुस 4:1; 5:8; 6:10, 21)। ''एक ही विश्वास'' है क्योंकि मसीहियत केवल एक ही है, कलीसिया के लिए सच्चाई की एक ही देह है, और आज लोगों के लिए परमेश्वर की ओर से केवल एक ही प्रकाशन है।

एक ही बपतिस्मा (4:5)

[5]एक ही बपतिस्मा।

आयत 5. एक ही बपतिस्मा अर्थात आज मान्य बपतिस्मा रोमियों 6:4 और कुलुस्सियों 2:12 के अनुसार पानी में डुबकी या दफ़नाए जाना है। ''बपतिस्मा'' (*baptisma*) का लिप्यंत्रण है, जिसमें डुबोना या गोता देना शामिल है।[6] मत्ती 28:19, 20 में जिस बपतिस्मे की आज्ञा दी गई थी, उसके लिए पानी के अन्दर जाकर उसमें से बाहर आना आवश्यक है (देखें यूहन्ना 3:23; प्रेरितों 8:36, 38, 39)। नये नियम का बपतिस्मा वे विश्वासी ले सकते हैं जो मन फिराने को तैयार हैं (मरकुस 16:15, 16; प्रेरितों 2:38) और परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार करते हैं (देखें मत्ती 10:32, 33; प्रेरितों 8:37; रोमियों 10:9, 10)। बपतिस्मे का चौहरा उद्देश्य बचाए जाना (मरकुस 16:16; 1 पतरस 3:21), पापों की क्षमा पाना (प्रेरितों 2:38), उसकी कलीसिया में मिलाए जाना (1 कुरिन्थियों 12:13) और मसीह में होना है (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27)।

कुछ लोगों का कहना है कि प्रेरितों 2:38 में ''अपने पापों की क्षमा के लिए'' का अर्थ ''के लिए'' के स्थान पर ''के कारण'' है। परन्तु ध्यान दिया जाना चाहिए कि ''अपने पापों की क्षमा के लिए'' (हिन्दी और यूनानी दोनों भाषाओं में-अनुवादक) मत्ती 26:26-28 की तरह है जहां यीशु ने कहा कि उसका लहू ''पापों की क्षमा के लिए'' बहाया गया था। क्या यीशु यह कह रहा था कि उसका लहू इसलिए बहाया गया ''क्योंकि पाप पहले ही क्षमा हो चुके थे'' या ''ताकि पाप क्षमा हो सकें''? यदि पाप पहले ही क्षमा हो चुका था, तो यीशु को मरने की क्या आवश्यकता थी? वह मरा ''ताकि पाप क्षमा हो सकें'' और प्रेरितों 2:38 में बपतिस्मे का उद्देश्य पतरस ने यही बताया। बपतिस्मे को पापों की क्षमा से अलग नहीं किया जा सकता। अपने आप में बपतिस्मा किसी भी प्रकार कुछ भी कमाता या इसमें अपना गुण नहीं है। बल्कि अधीन होने के कार्य में व्यक्ति अनुग्रह के परमेश्वर के दान को स्वीकार करता है जो कि पापों की क्षमा है। इफिसियों 4 वाला ''एक ही बपतिस्मा'' ही है।

एक ही परमेश्वर (4:6)

[6]और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर, और सब के मध्य में, और सब में है।

आयत 6. परमेश्वर एक है और मसीह के द्वारा वह मसीही लोगों का **पिता** है क्योंकि वे **सब** लोग जो मसीह में हैं उसकी संतान हैं (रोमियों 8:16, 17; गलातियों 3:26, 27)। पौलुस ने परमेश्वर की सर्वोच्चता या सर्वश्रेष्ठता की बात करते हुए इस बात को दोहराया कि यह एक ही परमेश्वर और पिता **सब के ऊपर** है। वह **सब के मध्य में** भी है जो लोगों के जीवनों में उपाय के द्वारा उसकी भागीदारी का सुझाव देता है। अन्त में परमेश्वर को **सब में** बताया गया है जो इस बात का संकेत है कि वह अपने लोगों के साथ मौजूद है।

पौलुस ने सात ''एकता के स्तम्भ'' अर्थात वे सात सच्चाइयां दे दी जिन्हें परमेश्वर की प्रकट

इच्छा के प्रति उचित व्यवहार की चाह रखने के लिए हम सब को मानना आवश्यक है। केवल इन बुनियादी सच्चाइयों को ही मानकर हम ''मेल के बन्ध में आत्मा की एकता'' रख सकते हैं (4:3)।

प्रासंगिकता

मसीही एकता के लिए परमेश्वर की योजना (4:4-6)

परमेश्वर का एक मास्टर प्लान एकता का है। पौलुस ने सात ''एके'' बताए जो हमारी एकता का आधार हैं। हम सब समान रूप में एक देह के अंग हैं। उस एक देह या अंग यानी सदस्य को एक आत्मा दिया गया था जो हम में से हर किसी में वास करता है। एक आशा हर मन को भरता है और वह हमारे प्रभु यीशु मसीह की धन्य वापसी है। हमारे ऊपर शासन करने वाला एक ही प्रभु है। एक ही विश्वास यानी शिक्षाओं का एक ही सेट हमारे जीवनों को चलाता है और हम बुनियादी सामान्य विश्वासों से जुड़े हैं। सब मसीही लोग उस एक देह में एक ही तरीके से यानी एक बपतिस्मे के द्वारा आते हैं। एक ही परमेश्वर और पिता हम सब का है, जो हम से प्रेम करता है और जिसने बीते अनन्तकाल से आने वाले अनन्तकाल तक के लिए सब कुछ योजना बनाई हुई है। वह हम से एक होने की उम्मीद करता है!

अपने चेलों के लिए यीशु की अन्तिम प्रार्थना थी: ''हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है, उन की रक्षा कर, कि वे हमारी नाईं एक हों''; ''... कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, ...'' (यूहन्ना 17:11, 23)।

क्रिस बुलर्ड

टिप्पणियां

[1]स्पायरस जोडिएट्स, संस्क., *द कम्पलीट वर्ड स्टडी न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (चटनूगा, टैनिसी: एएमजी पब्लिशर्स, 1991), 911. [2]देखें प्रेरितों 23:6; 24:15; 26:6, 7; रोमियों 1:6; 8:24; 1 कुरिन्थियों 15:19; कुलुस्सियों 1:5, 27; 2 थिस्सलुनीकियों 2:14; 1 तीमुथियुस 1:1; तीतुस 2:13; 1 यूहन्ना 3:2, 3. [3]देखें रोमियों 10:9; 14:8, 9; 1 कुरिन्थियों 8:6; 12:3; फिलिप्पियों 2:9-11. [4]विलियम बार्कले, *जीज़स ऐज़ दे सॉ हिम* (लंदन: एससीएम प्रैस, 1962), 408-20. [5]वही। [6]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आ़फ़ द न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑ़फ़ शिकागो प्रैस, 2000), 165.